

# ॥ आदिपुरुषः ॥



## पौष जनवरी माघ

| सोम | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | रवि |
|-----|------|-----|------|-------|-----|-----|
|     |      |     |      |       | ०१  | ०२  |
| ०३  | ०४   | ०५  | ०६   | ०७    | ०८  | ०९  |
| १०  | ११   | १२  | १३   | १४    | १५  | १६  |
| १७  | १८   | १९  | २०   | २१    | २२  | २३  |
| २४  | २५   | २६  | २७   | २८    | २९  | ३०  |
| ३१  |      |     |      |       |     |     |

एकादशी पूर्णिमा अमावस्या

## त्यौहार

- ०१ शनि - सत मासिक शिवरात्रि
- ०२ रवि - पौष अमावस्या
- १३ गुरु - पौष पुत्रदा एकादशी
- १४ शुक्र - पोंगल, उत्तरायणमकर संक्रांति
- १५ शनि - प्रदोष व्रत (स)
- १७ सोम - पौष पूर्णिमा व्रत
- २१ शुक्र - संकष्टीचतुर्थी
- २८ शुक्र - षटतिला एकादशी
- ३० रवि - मासिक शिवरात्रि



## जीव अष्टकम्

अहम् अचिन्त्यः अमरः नित्यो रूपः  
अहं सत्यो सत्यांशः सत्यस्वरूपः  
अहम् अक्लेद्यश्च अदाह्यः अशोष्यः  
अहं कृष्णदासः अहं कृष्णदासः ॥१॥

नाहं ब्रह्मा विष्णु च रुद्रः बसोबः  
नाहम् आदित्यो मरुतः यक्षः देवः  
नाहं बालः बृद्धश्च नारी पुरुषः  
अहं कृष्णदासः अहं कृष्णदासः ॥२॥

अहं अजन्मा अब्ययो मुक्त सत्यः  
अहम् कूटस्थाचल पुरुषो नित्यः  
अहं कृष्णांशः कृष्ण देवस्य अंशः  
अहं कृष्णदासः अहं कृष्णदासः ॥३॥

नाहम् एतत् देहश्च ना तस्य अंगः  
नाहं कस्य संगश्च नाहम् असंगः  
नाहं पंचप्राणः नाहं पंचकोषः  
अहं कृष्णदासः अहं कृष्णदासः ॥४॥

अहं गुणातीतः अहं कालातीतः  
अहं आनन्दो शिव स्वरूपो सत्यः  
अहं चिदानन्दोहं कृष्णस्य दासः  
अहं कृष्णदासः अहं कृष्णदासः ॥५॥

अहम् तेन सह एकत्वं सम्बन्धम्  
अहम् तेन सह सम्बन्धम् पृथकम्  
अहम् तदभेदाभेदश्च अचिन्त्यम्  
अहं कृष्णदासः अहं कृष्णदासः ॥६॥

अहं विस्मृतवान् मम रूपोशुद्धः  
अहं माया अनले देहे आबद्धः  
अहं शतोशतः आशया निबद्धः  
अहं कृष्णदासः अहं कृष्णदासः ॥७॥

अहं कृष्णदासः अहं कृष्णदासः  
अहं कृष्णदासः अहं कृष्णदासः  
अहं कृष्णदासः अहं कृष्णदासः  
अहं कृष्णदासः अहं कृष्णदासः ॥८॥

॥ इति जीव अष्टकम् सम्पूर्णम् ॥



# ॥ आदिपुरुषः ॥



## माघ फरवरी फाल्गुन

| सोम | मंगल            | बुध             | गुरु | शुक्र | शनि             | रवि             |
|-----|-----------------|-----------------|------|-------|-----------------|-----------------|
|     | ०१ <sup>☾</sup> | ०२              | ०३   | ०४    | ०५              | ०६              |
| ०७  | ०८              | ०९              | १०   | ११    | १२ <sup>☿</sup> | १३              |
| १४  | १५              | १६ <sup>♁</sup> | १७   | १८    | १९              | २०              |
| २१  | २२              | २३              | २४   | २५    | २६              | २७ <sup>♋</sup> |
| २८  |                 |                 |      |       |                 |                 |

☿ एकादशी   
 ♁ पूर्णिमा   
 ☾ अमावस्या

## त्यौहार

|           |                                 |
|-----------|---------------------------------|
| ०१ मंगल - | माघ अमावस्या                    |
| ०५ शनि -  | बसंत पंचमी, सरस्वती पूजा        |
| १२ शनि -  | जया / भामी एकादशी               |
| १३ रवि -  | प्रदोष व्रत (स), कुंभ संक्रांति |
| १६ बुध -  | माघ पूर्णिमा व्रत               |
| २० रवि -  | संकष्टी चतुर्थी                 |
| २७ रवि -  | विजया एकादशी                    |
| ३८ सोम -  | प्रदोष व्रत (कश्मीर)            |



## भूतनाथ अष्टकम्



शिव शिव शक्तिनाथं संहारं शं स्वरूपम्  
नव नव नित्यनृत्यं ताण्डवं तं तन्नादम्  
घन घन घूर्णीर्मघम् घंघोरं घं त्रिनादम्  
भज भज भस्मलेपम् भजामि भूतनाथम् ॥१॥

कळ कळ काळरूपमं कल्लोळम् कं कराळम्  
डम डम डमनादं डम्बुरुं डंकनादम्  
सम सम शक्तग्रिबम् सर्वभूतं शुरेशम्  
भज भज भस्मलेपम भजामि भूतनाथम् ॥२॥

रम रम रामभक्तं रमेशं रां राराबम्  
मम मम मुक्तहस्तम् महेशं मं मधुरम्  
बम बम ब्रह्म रूपमं बामेशं बं बिनाशम्  
भज भज भस्मलेपम भजामि भूतनाथम् ॥३॥

हर हर हरिप्रियं त्रितापं हं संहारम्  
खम खम क्षमाशीळं सपापं खं क्षमणम्  
द्ग द्ग ध्यान मूर्तिम् सगुणं धं धारणम्  
भज भज भस्मलेपम भजामि भूतनाथम् ॥४॥

पम पम पापनाशं प्रज्वलं पं प्रकाशम्  
गम गम गुह्यतत्त्वं गिरिषं गं गणानाम्  
दम दम दानहस्तं धुन्दरं दं दारुणं  
भज भज भस्मलेपम भजामि भूतनाथम् ॥५॥

गम गम गीतनाथं दूर्गमं गं गंतव्यम्  
टम टम रूडमाळम् टकारम् टंकनादम्  
भम भम भ्रम् भ्रमरम् भैरवम् क्षेत्रपाळम्  
भज भज भस्मलेपम भजामि भूतनाथम् ॥६॥

त्रिशुळधारी संघारकारी गिरिजानाथम् ईश्वरम्  
पार्वतीपति त्वम् मायापति शुभ्रवर्णम् महेश्वरम्  
कैळाशनाथ सतिप्राणनाथ महाकालं कालेश्वरम्  
अर्धचंद्रम् शीरकिरीटम् भूतनाथं शिबम् भजे ॥७॥

नीलकंठाय सत्स्वरूपाय सदा शिवाय नमो नमः  
यक्षरूपाय जटाधराय नागदेवाय नमो नमः  
इंद्रहाराय त्रिलोचनाय गंगाधराय नमो नमः  
अर्धचंद्रम् शीरकिरीटम् भूतनाथं शिबम् भजे ॥८॥

तब कृपाकृष्णदासः भजति भूतनाथम्  
तब कृपाकृष्णदासः स्मरति भूतनाथम्  
तब कृपाकृष्णदासः पश्यति भूतनाथम्  
तब कृपाकृष्णदासः पिबति भूतनाथम् ॥९॥

अथ कृष्णदासः विरचित भूतनाथ अष्टकम् यः  
पठति निस्कामभावेन सः शिवलोकं सगच्छति ॥

# ॥ आदिपुरुषः ॥



## फाल्गुन मार्च चैत्र

| सोम | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | रवि |
|-----|------|-----|------|-------|-----|-----|
|     | ०१   | ०२  | ०३   | ०४    | ०५  | ०६  |
| ०७  | ०८   | ०९  | १०   | ११    | १२  | १३  |
| १४  | १५   | १६  | १७   | १८    | १९  | २०  |
| २१  | २२   | २३  | २४   | २५    | २६  | २७  |
| २८  | २९   | ३०  | ३१   |       |     |     |

एकादशी पूर्णिमा अमावस्या

## त्यौहार

- ०१ मंगल - महाशिवरात्रि, मासिक शिवरात्रि
- ०२ बुध - फाल्गुन अमावस्या
- १४ सोम - आमलकी एकादशी
- १५ मंगल - प्रदोष व्रत (स), मीना संक्रांति
- १७ गुरु - होलिका दहन
- १८ शुक्र - होली, फाल्गुन पूर्णिमा व्रत
- २१ सोम - संकष्टी चतुर्थी
- २८ सोम - पापमोचनी एकादशी
- २९ मंगल - प्रदोष व्रत (कश्मीर)
- ३० बुध - मासिक शिवरात्रि

## कारण षट्कम्

मम जीवनस्य जीवनं उद्भाषितं नित्यशोभनं  
त्वमेव देवं त्वमेव सर्वम्  
हृदि स्थिते सदा धारणम्  
हे कृष्ण हे माधव हे देव त्वम्  
सर्व कारणस्य कारणम् ॥१॥

मम हृदयस्य हृदयं सत्भाषितं नित्य सद्यम्  
त्वमेव पूर्णं त्वमेव स्वर्णम्  
प्रेमं आनंदं अद्भुदयम्  
है कृष्ण है माधव है देव त्वम्  
सर्व कारणस्य कारणम् ॥२॥

मम विचारस्य विचारं सद्भाव हृद्भाव संचारम्  
त्वमेव सत्यं त्वमेव नित्यम्  
स्मृति ज्ञानं सर्व आधारम्  
है कृष्ण है माधव है देव त्वम्  
सर्व कारणस्य कारणम् ॥३॥

मम शरीरस्य आधारम् त्वमेव नित्य निराधारम्  
त्वमेव धर्मं त्वमेव कर्मम्  
सर्वसूत्रस्य सूत्रधारम्  
है कृष्ण है माधव है देव त्वम्  
सर्व कारणस्य कारणम् ॥४॥

मम सर्व सुख दायकं नित्यसुधा वेणु गायकम्  
त्वमेव कर्ता त्वमेव धर्ता  
माता पिता आत्म नायकम्  
है कृष्ण है माधव है देव त्वम्  
सर्व कारणस्य कारणम् ॥५॥

मम दिव्य नन्दनन्दनं आनंद कंद सुचंदनम्  
त्वमेव स्वामी है अन्तर्यामी  
सर्व हृदयस्य स्पंदनम्  
है कृष्ण है माधव है देव त्वम्  
सर्व कारणस्य कारणम् ॥६॥

॥ इति कारण षट्कम सम्पूर्णम् ॥



# ॥ आदिपुरुषः ॥



## चैत्र अप्रैल वैशाख

| सोम | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | रवि |
|-----|------|-----|------|-------|-----|-----|
|     |      |     |      | ०१    | ०२  | ०३  |
| ०४  | ०५   | ०६  | ०७   | ०८    | ०९  | १०  |
| ११  | १२   | १३  | १४   | १५    | १६  | १७  |
| १८  | १९   | २०  | २१   | २२    | २३  | २४  |
| २५  | २६   | २७  | २८   | २९    | ३०  |     |

● एकादशी 
 ● पूर्णिमा 
 ● अमावस्या

## त्यौहार

- ०१ शुक्र - चैत्र अमावस्या
- ०२ शनि - चैत्र नवरात्रि, उगादि
- ०३ रवि - चेती चांद
- १० रवि - राम नवमी
- ११ सोम - चैत्र नवरात्रि पारणा
- १२ मंगल - कामदा एकादशी
- १४ गुरु - प्रदोष व्रत (स), मेष संक्रांति
- १६ शनि - हनुमान जयंती, चैत्र पूर्णिमा व्रत
- १९ मंगल - संकष्टी चतुर्थी
- २६ मंगल - वरुथिनी एकादशी
- २८ गुरु - प्रदोष व्रत (कश्मीर)
- २९ शुक्र - मासिक शिवरात्रि
- ३० शनि - वैशाख अमावस्या

## रामरघुनाथ अष्टकम्

दशरथनन्दन-दाशरथीघन-पूर्णचन्द्रतनु-कान्तिमयम्  
दिव्यसुनयन-रण्जीतरञ्जन-रमापतिवीर-सीतानाथम्  
गहनकानने-लक्ष्मीलक्ष्मीपति-पितृसत्यधारी-सत्यसुतम्  
पूर्णसत्यदेव-राघवमाधव-रामरघुनाथ-पदौभजे ॥१॥

मण्डितधरणी-खण्डिततनुनतमस्तकेभूषित-क्लेशभारम्  
सम्भवतियुगेयुगे-नानाकृतधृतरूप-अरूपस्वरूप-शस्त्रधरम्  
पापासुरनिधन-साधुपरित्राण-दरिद्रदारुण-त्राणमूर्तिम्  
दीर्घवक्षस्थल-कौमुदकमल-रामरघुनाथ-पदौभजे ॥२॥

घनघनघनीभूत-कौशल्यासम्भूत-रामरमाकान्त-जगन्नाथम्  
शान्तसुशीतल-सुनीलअनल-नीलतरलरल-तबमुखम्  
चन्दनविमर्दन-मदनमोहन-नग्ननिमग्नधीर-भक्तरमम्  
हस्तेशस्त्रधारी-त्रिभुवनविहारी-रामरघुनाथ-पदौभजे ॥३॥

अहल्यातारक-बलीसंहारक-शत्रुविनाशक-विश्वदेवम्  
प्रेमप्रदायक-ब्रह्माण्डनायक-तारणपतक-सत्यप्रियम्  
दशमुखमर्द्धन-भक्तप्राणधन-नित्यनिरञ्जन-सर्वसारम्  
सर्वमनोरञ्जन-सर्वमानभञ्जन-रामरघुनाथ-पदौभजे ॥४॥

विक्रान्तकुण्डीर-स्थिरमनोहर-दिव्यकलेवर-मायाधरम्  
नीरजबदन-पङ्कजलोचन-पुष्करचरण-मोक्षप्रदम्  
रामरामहेराम-श्रीरामजयराम-रामरमणचित्तेचित्तधरम्  
पतिपतिसीतापति-भूपतिश्रीपति-रामरघुनाथ-पदौभजे ॥५॥

मन्दरमान्दर-सानन्दसुन्दर-तरुणधारुणपति-सृष्टिधरम्  
सदाप्रजाबत्सल-कोमलउत्पल-विमलश्यामल-कलेवरम्  
जानकीवल्लभ-तबकरपल्लव-सौरभदुर्लभ-तत्त्वसारम्  
मोक्षप्रदायक-आनन्ददायक-रामरघुनाथ-पदौभजे ॥६॥

मारुतिसेवित-इन्दिरावन्दित-विश्वसन्दनीत-श्रीकन्दरम्  
चण्डवातगति-छिदतिदुर्गति-सृष्टिप्रलयस्थिति-मुलात्मूलम्  
हेप्रभुईश्वर-श्रीधरभूधर-सर्वांगसुन्दर-रंगनाथम्  
कृपालुसागर-नित्यमनोहर-रामरघुनाथ-पदौभजे ॥७॥

तबअनुस्मरण-तबपरिचिन्तन-प्रधानपठन-नित्यसुखम्  
मुखेतबगापन-तबलीलावर्णन-तबनाममार्जन-शुद्धमयम्  
क्लेशक्लेशमहाक्लेशभबसूरा देवेश-रक्षाकुरुस्वामी-गोरक्षकम्  
हे रघुनन्दन-सर्वक्लेशखण्डन-रामरघुनाथ-पदौभजे ॥८॥

ममबनरोदन-परितापअर्दन-अपसारतबसंग-रघुनाथम्  
तबपददर्शन-सदाचित्तेचिन्तन-ममप्राणप्राणधन-चक्रधरम्  
उत्कलसम्भवशुभागसुभगभणतितबमालीका-गोनायकम्  
दीनकृष्णदास-प्रतिश्वासप्रश्वास-रामरघुनाथ-पदौभजे ॥९॥

॥ इति रामरघुनाथ अष्टकम् सम्पूर्णम् ॥



# ॥ आदिपुरुषः ॥



## मधुराष्टकं

अधरं मधुरं वदनं मधुरं नयनं मधुरं हसितं मधुरं ।  
हृदयं मधुरं गमनं मधुरं मधुराधिपते रखिलं मधुरं ॥१॥

वचनं मधुरं चरितं मधुरं वसनं मधुरं वलितं मधुरं ।  
चलितं मधुरं भ्रमितं मधुरं मधुराधिपते रखिलं मधुरं ॥२॥

वेणुर्मधुरो रेणुर्मधुरः पाणिर्मधुरः पादौ मधुरौ ।  
नृत्यं मधुरं सख्यं मधुरं मधुराधिपते रखिलं मधुरं ॥३॥

गीतं मधुरं पीतं मधुरं भुक्तं मधुरं सुप्तं मधुरं ।  
रूपं मधुरं तिलकं मधुरं मधुराधिपते रखिलं मधुरं ॥४॥

करणं मधुरं तरणं मधुरं हरणं मधुरं रमणं मधुरं ।  
वमितं मधुरं शमितं मधुरं मधुराधिपते रखिलं मधुरं ॥५॥

गुज्जा मधुरा माला मधुरा यमुना मधुरा वीची मधुरा ।  
सलिलं मधुरं कमलं मधुरं मधुराधिपते रखिलं मधुरं ॥६॥

गोपी मधुरा लीला मधुरा युक्तं मधुरं मुक्तं मधुरं ।  
दृष्टं मधुरं सृष्टं मधुरं मधुराधिपते रखिलं मधुरं ॥७॥

गोपा मधुरा गावो मधुरा यष्टिर्मधुरा सृष्टिर्मधुरा ।  
दलितं मधुरं फलितं मधुरं मधुराधिपते रखिलं मधुरं ॥८॥

॥ इति श्री वल्लभाचार्य विरचित मधुराष्टकं संपूर्णम् ॥

## वैशाख मई ज्येष्ठ

| सोम | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | रवि |
|-----|------|-----|------|-------|-----|-----|
|     |      |     |      |       |     | ०१  |
| ०२  | ०३   | ०४  | ०५   | ०६    | ०७  | ०८  |
| ०९  | १०   | ११  | १२   | १३    | १४  | १५  |
| १६  | १७   | १८  | १९   | २०    | २१  | २२  |
| २३  | २४   | २५  | २६   | २७    | २८  | २९  |
| ३०  | ३१   |     |      |       |     |     |

एकादशी पूर्णिमा अमावस्या

## त्यौहार

- ०१ रवि - मई दिवस / सूर्य ग्रहण
- ०२ सोम - भगवान परशुराम जयंति अक्षयतृतीया
- ०८ रवि - गंगा सप्तमी मातृ दिवस
- १० मंगल - सीता नवमी
- १२ गुरु - मोहिनी एकादशी
- १४ शनि - नरसिंह जयंती
- १५ रवि - वृषभ संक्रांति/कूर्म जयंती
- १६ सोम - बुद्ध पूर्णिमा / चंद्र ग्रहण
- १७ मंगल - नारद जयंती
- २६ गुरु - अपरा एकादशी
- ३० सोम - शनि जयंती/ वट सावित्री व्रत



# ॥ आदिपुरुषः ॥



## ज्येष्ठ जून आषाढ

| सोम | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | रवि |
|-----|------|-----|------|-------|-----|-----|
|     |      | ०१  | ०२   | ०३    | ०४  | ०५  |
| ०६  | ०७   | ०८  | ०९   | १०    | ११  | १२  |
| १३  | १४   | १५  | १६   | १७    | १८  | १९  |
| २०  | २१   | २२  | २३   | २४    | २५  | २६  |
| २७  | २८   | २९  | ३०   |       |     |     |

एकादशी पूर्णिमा अमावस्या

## त्यौहार

- ०५ रवि - विश्व पर्यावरण दिवस
- ०९ गुरु - गंगा दशहरा
- १० शुक्र - निर्जला एकादशी
- ११ शनि - गौना निर्जला एकादशी
- १४ मंगल - ज्येष्ठ पूर्णिमा/कबीर जयंती
- १५ बुध - मिथुन संक्रांति
- १९ रवि - फादर्स डे
- २० सोम - योग और संगीत दिवस
- २४ शुक्र - योगिनी एकादशी

## कृष्णक्रिया षटकम्

बिनिद्र जीबोहम् गहनत्रासम्  
संसारअनळे बिधुरबासम्  
अनन्तपुरुषः जगन्निबास  
अत्रागच्छ स्वामी अत्र आगच्छ ॥१॥

एकाकी बिहारम् च सर्वक्रिया  
एकाकी कर्मो धर्मश्च सकळम्  
अनन्तपुरुषः जगन्निबास  
अत्रागच्छ स्वामी अत्र आगच्छ ॥२॥

पचामि पाकोहम् यथा सामर्थ्यम्  
फळजळेन सह बृन्दा नाथ  
अनन्तपुरुषः जगन्निबास  
अत्रागच्छ स्वामी अत्र आगच्छ ॥३॥

करोमि देब ते शय्यारचितम्  
आनन्ददायिनी प्रियासहितम्  
अनन्तपुरुषः जगन्निबास  
अत्रागच्छ स्वामी अत्र आगच्छ ॥४॥

नन्दनन्दन त्वं गोपिकाकान्त  
भक्तानां प्राण स्त्वं च जगन्नाथ  
अनन्तपुरुषः जगन्निबास  
अत्रागच्छ स्वामी अत्र आगच्छ ॥५॥

त्वया बिना नाथ स्थळे मत्स्याहम्  
यथा प्राणहीन निर्देहीदेहम्  
आबाह्वति त्वाम् नित्यकृष्णदासः  
अत्रागच्छ स्वामी अत्र आगच्छ  
अनन्तपुरुषः ....अत्र आगच्छ ॥६॥

॥ इति कृष्णदास विरचित कृष्णक्रिया  
षटकम् सम्पूर्णम् ॥

# ॥ आदिपुरुषः ॥



## पूर्णब्रह्म स्तोत्रम्

पूर्णचन्द्रमुखं निलेन्दु रूपम्  
उद्गाषितं देवं दिव्यं स्वरूपम्  
पूर्णं त्वं स्वर्णं त्वं वर्णं त्वं देवम्  
पिता माता बंधु त्वमेव सर्वम्  
जगन्नाथ स्वामी भक्तभावप्रेमी नमाम्यहम्  
जगन्नाथ स्वामी भक्तभावप्रेमी नमाम्यहम् ॥१॥

कुंचितकेशं च संचितवेशम्  
वर्तुलस्थूलनयनं ममेशम्  
पीनकनीनिकानयनकोशम्  
आकृष्टओष्ठं च उत्कृष्टश्वासम्  
जगन्नाथ स्वामी भक्तभावप्रेमी नमाम्यहम्  
जगन्नाथ स्वामी भक्तभावप्रेमी नमाम्यहम् ॥२॥

नीलाचले चंचलया सहितम्  
आदिदेव निश्चलानंदे स्थितम्  
आनन्दकन्दं विश्वविन्दुचंद्रम्  
नंदनन्दनं त्वं इन्द्रस्य इन्द्रम्  
जगन्नाथ स्वामी भक्तभावप्रेमी नमाम्यहम्  
जगन्नाथ स्वामी भक्तभावप्रेमी नमाम्यहम् ॥३॥

सृष्टिस्थितिप्रलयसर्वमूलं  
सूक्ष्मातिसुक्ष्मं त्वं स्थूलातिस्थूलम्  
कांतिमयानन्तं अन्तिमप्रान्तं  
प्रशांतकुन्तलं ते मूर्तिमंतम्  
जगन्नाथ स्वामी भक्तभावप्रेमी नमाम्यहम्  
जगन्नाथ स्वामी भक्तभावप्रेमी नमाम्यहम् ॥४॥

यज्ञतृपवेदज्ञानात् अतीतं  
भावप्रेमछंदे सदावेशित्वम्  
शुद्धात् शुद्धं त्वं च पूर्णात् पूर्णं  
कृष्ण मेघतुल्यं अमूल्यवर्णं  
जगन्नाथ स्वामी भक्तभावप्रेमी नमाम्यहम्  
जगन्नाथ स्वामी भक्तभावप्रेमी नमाम्यहम् ॥५॥

विश्वप्रकाशम् सर्वक्लेशनाशम्  
मन-बुद्धि-प्राण-श्वासप्रश्वासम्  
मत्स्य-कूर्म-नृसिंह-वामनः त्वम्  
वराह-राम-अनंतः अस्तित्वम्  
जगन्नाथ स्वामी भक्तभावप्रेमी नमाम्यहम्  
जगन्नाथ स्वामी भक्तभावप्रेमी नमाम्यहम् ॥६॥

ध्रुवस्य विष्णु त्वं भक्तस्य प्राणम्  
राधापति देव हे आर्त्तत्राणम्  
सर्व ज्ञान सारं लोक-आधारम्  
भावसंचारम् अभावसंहारम्  
जगन्नाथ स्वामी भक्तभावप्रेमी नमाम्यहम्  
जगन्नाथ स्वामी भक्तभावप्रेमी नमाम्यहम् ॥७॥

बलदेवसुभद्रापार्श्वे स्थितम्  
सुदर्शनसंगे नित्यं शोभितम्  
नमामि नमामि सर्वांगे देवम्  
हे पूर्णब्रह्म हरि मम सर्वम्  
जगन्नाथ स्वामी भक्तभावप्रेमी नमाम्यहम्  
जगन्नाथ स्वामी भक्तभावप्रेमी नमाम्यहम् ॥८॥

कृष्णदासहृदि भाव संचारम्  
सदा कुरु स्वामी तव किंकरम्  
तव कृपा विन्दु हि एक सारम्  
अन्यथा हे नाथ सर्व असारम्  
जगन्नाथ स्वामी भक्तभावप्रेमी नमाम्यहम्  
जगन्नाथ स्वामी भक्तभावप्रेमी नमाम्यहम् ॥९॥

॥ इति पूर्णब्रह्म स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

## आषाढ जुलाई श्रावण

| सोम | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | रवि |
|-----|------|-----|------|-------|-----|-----|
|     |      |     |      | ०१    | ०२  | ०३  |
| ०४  | ०५   | ०६  | ०७   | ०८    | ०९  | १०  |
| ११  | १२   | १३  | १४   | १५    | १६  | १७  |
| १८  | १९   | २०  | २१   | २२    | २३  | २४  |
| २५  | २६   | २७  | २८   | २९    | ३०  | ३१  |

एकादशी पूर्णिमा अमावस्या

## त्यौहार

- १ शुक्र - चिकित्सक दिवस / रथ यात्रा
- १० रवि - देव शयनी एकादशी
- १३ बुध - आषाढ पूर्णिमा/गुरु पूर्णिमा
- १६ शनि - कारक संक्रांति
- २४ रवि - कामिका एकादशी
- ३१ रवि - हरियाली तीज



# ॥ आदिपुरुषः ॥



## श्रीकृष्णाष्टकं

भजे ब्रजैकमण्डनं समस्तपापखण्डनं  
स्वभक्तचित्तरंजनं सदैव नन्दनन्दनम् ।  
सुपिच्छगुच्छमस्तकं सुनादवेणुहस्तकं  
अनंगरंगसागरं नमामि कृष्णनागरम् ॥१॥

मनोजगर्वमोचनं विशाललोललोचनं  
विधूतगोपशोचनं नमामि पद्मलोचनम् ।  
करारविन्दभूधरं स्मितावलोकसुन्दरं  
महेन्द्रमानदारणं नमामि कृष्णावारणम् ॥२॥

कदम्बसूनकुण्डलं सुचारुगण्डमण्डलं  
ब्रजांगनैकवल्लभं नमामि कृष्णदुर्लभम् ।  
यशोदया समोदया सगोपया सनन्दया  
युतं सुखैकदायकं नमामि गोपनायकम् ॥३॥

सदैव पादपंकजं मदीय मानसे निजं  
दधानमुक्तमालकं नमामि नन्दबालकम् ।  
समस्तदोषशोषणं समस्तलोकपोषणं  
समस्तगोपमानसं नमामि नन्दलालसम् ॥४॥

भुवो भरावतारकं भवाब्धिकर्णधारकं  
यशोमतीकिशोरकं नमामि चित्तचोरकम् ।  
दृगन्तकान्तभंगिनं सदा सदासिंघिनं  
दिने दिने नवं नवं नमामि नन्दसम्भवम् ॥५॥

गुणाकरं सुखाकरं कृपाकरं कृपापरं  
सुरद्विषन्निकन्दनं नमामि गोपनन्दनम् ।  
नवीनगोपनागरं नवीनकेलिलम्पटं  
नमामि मेघसुन्दरं तडित्प्रभालसत्पटम् ॥६॥

समस्तगोपनन्दनं हृदम्बुजैकमोदनं  
नमामि कुंजमध्यगं प्रसन्नभानुशोभनम् ।  
निकामकामदायकं दृगन्तचारुसायकं  
रसालवेणुगायकं नमामि कुंजनायकम् ॥७॥

विदग्धगोपिकामनोमनोज्ञतल्पशायिनं  
नमामि कुंजकानने प्रब्रद्धवन्हिपायिनम् ।  
किशोरकान्तिरंजितं दृगंगजनं सुशोभितं  
गजेन्द्रमोक्षकारिणं नमामि श्रीविहारिणम् ॥८॥

यदा तदा यथा तथा तथैव कृष्णसत्कथा  
मया सदैव गीयतां तथा कृपा विधीयताम् ।  
प्रमाणिकाष्टकद्वयं जपत्यधीत्य यः पुमान्  
भवेत्स नन्दनन्दने भवे भवे सुभक्तिमान् ॥९॥

## श्रावण अगस्त भाद्रपद

| सोम | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | रवि |
|-----|------|-----|------|-------|-----|-----|
| ०१  | ०२   | ०३  | ०४   | ०५    | ०६  | ०७  |
| ०८  | ०९   | १०  | ११   | १२    | १३  | १४  |
| १५  | १६   | १७  | १८   | १९    | २०  | २१  |
| २२  | २३   | २४  | २५   | २६    | २७  | २८  |
| २९  | ३०   | ३१  |      |       |     |     |

एकादशी पूर्णिमा अमावस्या

## त्यौहार

- ०२ मंगल - नाग पंचमी
- ०३ बुध - कल्कि जयंती
- ०७ रवि - मित्रता दिवस
- ०८ सोम - श्रावण पुत्रदा एकादशी
- ११ गुरु - रक्षा बंधन
- १२ शुक्र - श्रावण पूर्णिमा/  
वरलक्ष्मी व्रत/ गायत्री जयंती
- १४ रवि - कजरी तीजो
- १५ सोम - स्वतंत्रतादिवस
- १७ बुध - सिंह संक्रांति/ बलराम जयंती
- १९ शुक्र - जन्माष्टमी
- २३ मंगल - अजा एकादशी
- ३० मंगल - वराह जयंती/ हरतालिका तीज
- ३१ बुध - गणेश चतुर्थी



इति श्रीमद शंकराचार्यकृतं श्रीकृष्णाष्टकं सम्पूर्णम् ॥



# ॥ आदिपुरुषः ॥



## राधिकापति अष्टकम्

देहे-चन्दन-मण्डनं गोपाळ-नन्द-नन्दनम्  
समस्त-पाप-खण्डनं समस्त-गर्भ-भञ्जनम्  
समस्त-दुःख-नाशनं प्रेम-मदन-मोहनम्  
राधिकापति-नागरं नमामि-कृष्ण-ईश्वरम् ॥१॥

सुपिच्छ-गुच्छ-मस्तकं विश्व-ब्रह्माण्ड-नायकम्  
कानने-दिव्य-कुण्डलं सुचारु-गण्ड-मण्डलम्  
दिव्यघन-बिम्बाधरं बदन-चन्द्र-चोकरम्  
राधिकापति-नागरं नमामि-कृष्ण-ईश्वरम् ॥२॥

गिरिधर-बंशी-स्वरं मनोहर-चित्त-चोरम्  
गोपी-दुकुल-हरणं जय-श्रीराधा-रमणम्  
विश्वे-धर्म-संस्थापनं अर्जुन-रथ-चालनम्  
राधिकापति-नागरं नमामि-कृष्ण-ईश्वरम् ॥३॥

मोहन-वेणु-तरङ्गम् गोपि-चित्त-निशाभङ्गम्  
अपूर्व-प्रेम-मिळनं अत्यन्त-प्रीति-वर्द्धनम्  
प्रति-श्वास-प्रति-क्षणम् हरि-मनन-स्मरणम्  
राधिकापति-नागरं नमामि-कृष्ण-ईश्वरम् ॥४॥

मदन-सुन्दर-वेशम् गोपीनाथ-श्रीनिवासम्  
मधुर-राधा-हृदयम् अखण्ड-ज्योति-तनयम्  
अपूर्व-केळि-प्रणयम् तुष्यन्ति-सर्व-हृदयम्  
राधिकापति-नागरं नमामि-कृष्ण-ईश्वरम् ॥५॥

धन्य-राधा-कुच-स्थळम् श्रित-मण्डल-गोपाळम्  
श्रीराधा-कृष्ण-युगळम् सम्मोह-जीव-सकळम्  
तव-शरीर-संजात-अल्हादिनी-प्रेमे-रतम्  
राधिकापति-नागरं नमामि-कृष्ण-ईश्वरम् ॥६॥

समस्त-भूत-पोषणम् समस्त-पाप-शोषणम्  
कालिआ-नाग-गञ्जनम् द्रौपदी-दुकुळ-मानम्  
कंस-चाणुर-मर्द्धनम् किशोरी-प्रेम-मोहनम्  
राधिकापति-नागरं नमामि-कृष्ण-ईश्वरम् ॥७॥

रूप-अनन्त-माधव अनन्त-महिमा-तव  
अनन्त-विश्व-धारणम् सृष्टि-अनन्त-पालनम्  
अनन्त-कोटि-कान्तिमा यस्य-अनन्त-महिमा  
राधिकापति-नागरं नमामि-कृष्ण-ईश्वरम् ॥८॥

प्रति-रोम-प्रति-प्राण-तव-नाम-मुखे-पानम्  
तव-पाशे-मम-मन-तव-कीर्तन-श्रवणम्  
भव-संसारात्-उद्धार-कुरु-प्रभु-मायाधर  
कृष्णदास-तव-दीनः गोविन्द-चरणे-मनः ॥९॥

॥ इति राधिकापति अष्टकम् सम्पूर्णम् ॥



## भाद्रपद सितम्बर आश्विन

| सोम | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | रवि |
|-----|------|-----|------|-------|-----|-----|
|     |      |     | ०१   | ०२    | ०३  | ०४  |
| ०५  | ०६   | ०७  | ०८   | ०९    | १०  | ११  |
| १२  | १३   | १४  | १५   | १६    | १७  | १८  |
| १९  | २०   | २१  | २२   | २३    | २४  | २५  |
| २६  | २७   | २८  | २९   | ३०    |     |     |

एकादशी पूर्णिमा अमावस्या

## त्यौहार

- ०१ गुरु - ऋषि पंचमी
- ०२ शुक्र - विश्व नारियल दिवस
- ०४ रवि - राधा अष्टमी
- ०५ सोम - शिक्षक दिवस (भारत)
- ०६ मंगल - पार्श्व एकादशी
- ०७ बुध - वामन जयंती
- ०८ गुरु - करओणम
- ०९ शुक्र - अनंत चतुर्दशी
- १० शनि - भाद्रपद पूर्णिमा / श्राद्ध आरम्भ
- १४ बुध - हिंदी दिवस (भारत)
- १५ गुरु - इंजीनियर दिवस (भारत)
- १७ शनि - कन्या संक्रांति/ विश्वकर्मा पूजा
- २१ बुध - इंदिरा एकादशी
- २५ रवि - सर्व पितृ अमावस्या/  
महालय अंतर्राष्ट्रीय बेटी दिवस
- २६ सोम - नवरात्र आरम्भ



# ॥ आदिपुरुषः ॥



## आश्विन अक्टूबर कार्तिक

| सोम | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | रवि |
|-----|------|-----|------|-------|-----|-----|
|     |      |     |      |       | ०१  | ०२  |
| ०३  | ०४   | ०५  | ०६   | ०७    | ०८  | ०९  |
| १०  | ११   | १२  | १३   | १४    | १५  | १६  |
| १७  | १८   | १९  | २०   | २१    | २२  | २३  |
| २४  | २५   | २६  | २७   | २८    | २९  | ३०  |
| ३१  |      |     |      |       |     |     |

एकादशी पूर्णिमा अमावस्या

## त्यौहार

- ०१ शनि - विश्व मुस्कान दिवस
- ०२ रवि - सरस्वती आवाहन/ गांधी जयंती
- ०३ सोम - सरस्वती पूजा/ दुर्गा अष्टमी
- ०४ मंगल - महा नवमी
- ०५ बुध - दशहरा
- ०६ गुरु - पापकुंशा एकादशी
- ०८ रवि - महर्षि वाल्मीकि जयंती/ शरद पूर्णिमा
- १० सोम - विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस
- १३ गुरु - करवा चौथ
- १७ सोम - अहोई अष्टमी/ तुला संक्रांति
- २१ शुक्र - रमा एकादशी/ गोवत्स द्वादशी
- २३ रवि - धनतेरस/काली चौदस
- २४ सोम - नरक चतुर्दशी/दिवाली/ लक्ष्मी पूजा
- २६ बुध - गोवर्धन/भैया दूज
- ३० रवि - छठ पूजा



## महामाया अष्टकम्

भद्रकाळी विश्वमाता जगत्स्रोत कारिणी  
शिवपत्नी पापहर्त्री सर्वभूत तारिणी  
स्कन्दमाता शिवा शिवा सर्वसृष्टि धारिणी  
नमः नमः महामाया | हिमाळय-नन्दिनी ॥१॥

नारीणाम्च संखिन्यापि हस्तिनी बा चित्रिणी  
पद्मगन्धा पुष्परूपा सम्मोहिनी पद्मिनी  
मातृ-पुत्री-भग्नि-भार्या सर्वरूपा भवानी  
नमः नमः महामाया | भवभय-खण्डिनी ॥२॥

पाप-ताप-भव-भय भूतेश्वरी कामिनी  
तब-कृपा-सर्व-क्षय सर्वजना-बन्दिनी  
प्रेम-प्रीति-लज्जा-न्याय नारीणाञ्च-मोहिनी  
नमः नमः महामाया | ऋण्डमाळा-धारिणी ॥३॥

खड्ग-चक्र-हस्तेधारी संखीनि-सुनादिनी  
संमोहना-रूपा-नारी हृदय-विदारिणी  
अहंकार-कामरूपा-भुवन-विळासिनी  
नमः नमः महामाया | जगत-प्रकाशिनी ॥४॥

लह्व-लह्व-तब-जिह्वा पापाशुर मर्द्धिनी  
खण्ड-गण्ड-मुण्ड-स्पृहा शोभाकान्ति बर्द्धिनी  
अङ्ग-भङ्ग-रग-काया मायाछन्द छन्दिनी  
नमः नमः महामाया | दुःखशोक नाशिनी ॥५॥

धन-जन-तन-मान रूपेण त्वम् संस्थिता  
काम-क्रोध-लोभ-मोह-मद बापि मूढता  
निद्राहार-काम-भय पशुतुल्य जीवनात्  
नमः नमः महामाया | कुरु मुक्त बन्धनात् ॥६॥

मैत्री-दया-लक्ष्मी-वृत्ति-अन्ते जीव लक्षणा  
लज्जा-छाया-तृष्णा-क्षुधा बन्धनस्य कारणा  
तृष्टि-बुद्धि-श्रद्धा-भक्ति सदा मुक्ति दायािका  
शान्ति-भ्रान्ति-क्लान्ति-क्षान्ति तब रूपा अनेका  
प्रीति-स्मृति-जाति-शक्ति-रूपा माया अभेदया  
नमः नमः महामाया | नमस्त्वम् महाबिदया ॥७॥

नबदुर्गा-महाकाळी सर्वाङ्गभूषावृत्ताम्  
भुवनेश्वरी-मातङ्गी हन्तु मधुकैटभं  
विमळा-तारा-षोडशी हस्ते खड्ग धारीणि  
धुमावति-मा-बगळा महिषासुरे मर्द्धिनी  
बाळात्रिपुरासुन्दरी त्रिभुवन मोहिनी  
नमः नमः महामाया | सर्वदुःख हारिणी ॥८॥

मम माता लोके मर्त्य कृष्णदास तब भृत्य  
यदा तदा यथा तथा माया छिन्न मोक्ष कथा  
सदा सदा तव भिक्षा कृपा दीने भव रक्षा  
नम नम महामाया कृष्ण दासे तब दया ॥९॥

इति कृष्णदास विरचित महामाया अष्टकम् यः पठति  
सः भव सागर निस्तरति ॥



## कार्तिक नवम्बर मार्गशीर्ष

| सोम | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | रवि |
|-----|------|-----|------|-------|-----|-----|
|     | ०१   | ०२  | ०३   | ०४    | ०५  | ०६  |
| ०७  | ०८   | ०९  | १०   | ११    | १२  | १३  |
| १४  | १५   | १६  | १७   | १८    | १९  | २०  |
| २१  | २२   | २३  | २४   | २५    | २६  | २७  |
| २८  | २९   | ३०  |      |       |     |     |

एकादशी पूर्णिमा अमावस्या

## त्यौहार

- ०२ बुध - आयुर्वेद दिवस
- ०३ गुरु - कंस वध
- ०४ शुक्र - उत्थान एकादशी
- ०५ शनि - तुलसी विवाह
- ०८ मंगल - कार्तिक पूर्णिमा
- गुरु नानक जयंती
- २६ बुध - काल भैरव जयंती/ वृषिका संक्रांति
- २० रवि - एकादशी
- २८ सोम - विवाह पंचमी

## दामोदर अष्टकम्

नमामीश्वरं सच्चिदानन्दरूपं  
लसत्कुण्डलं गोकुले भ्राजमानम् ।  
यशोदाभियोलूखलाद्धावमानं  
परामृष्टमत्यन्ततो द्रुत्य गोप्या ॥१॥

रुदन्तं मुहुर्नेत्रयुगमं मृजन्तं  
कराम्भोजयुग्मेन सातङ्कनेत्रम् ।  
मुहुः श्वासकम्पत्रिरेखाङ्ककण्ठ-  
स्थितग्रैवं-दामोदरं भक्तिबद्धम् ॥२॥

इतीदृक् स्वलीलाभिरानन्दकुण्डे  
स्वघोषं निमज्जन्तमाख्यापयन्तम् ।  
तदीयेषितज्ञेषु भक्तैर्जितत्वं  
पुनः प्रेमतस्तं शतावृत्ति वन्दे ॥३॥

वरं देव मोक्षं न मोक्षावधिं वा  
न चान्यं वृणेऽहं वरेषादपीह ।  
इदं ते वपुर्नाथ गोपालबालं  
सदा मे मनस्याविरास्तां किमन्यैः ॥४॥

इदं ते मुखाम्भोजमत्यन्तनीलैर्-  
वृतं कुन्तलैः स्निग्ध-रक्तैश्च गोप्या ।  
मुहुश्चुम्बितं बिम्बरक्ताधरं मे  
मनस्याविरास्तां अलं लक्षलाभैः ॥५॥

नमो देव दामोदरानन्त विष्णो  
प्रसीद प्रभो दुःखजालाब्धिमग्नम् ।  
कृपादृष्टिवृष्ट्यातिदीनं बतानु  
गृहाणेश मां अज्ञमेध्यक्षिदृश्यः ॥६॥

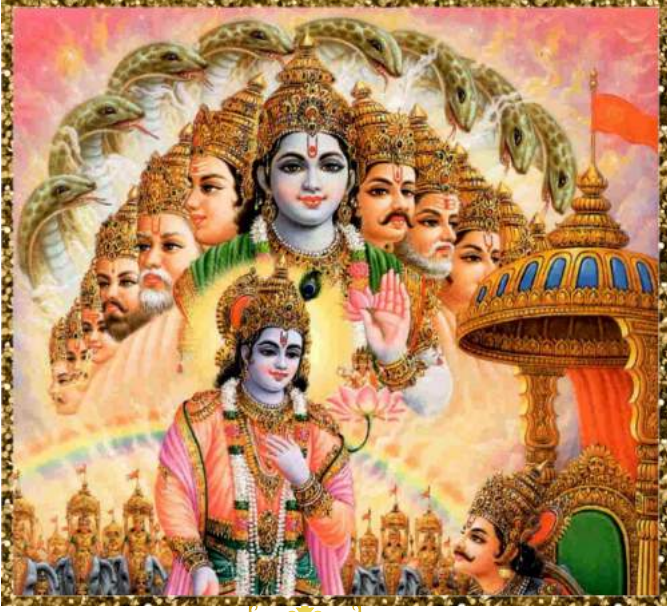
कुवेरात्मजौ बद्धमूर्त्यैव यद्वत्  
त्वया मोचितौ भक्तिभाजौ कृतौ च ।  
तथा प्रेमभक्तिं स्वकां मे प्रयच्छ  
न मोक्षे ग्रहो मेऽस्ति दामोदरेह ॥७॥

नमस्तेऽस्तु दाम्ने स्फुरद्दीप्तिधाम्ने  
त्वदीयोदरायाथ विश्वस्य धाम्ने ।  
नमो राधिकायै त्वदीयप्रियायै  
नमोऽनन्तलीलाय देवाय तुभ्यम् ॥८॥

॥ इति श्रीमदपद्मपुराणे श्री दामोदराष्टकम्  
सम्पूर्णम् ॥



# ॥ आदिपुरुषः ॥



## मोक्ष्य स्तोत्रम्

त्वं माता पिता त्वं त्वं बंधुसखा च  
त्वं भ्राता त्वं भग्नी त्वं जाया च पुत्री  
तव्यं पुत्रो त्वं शत्रु पतिप्रेमिकस्त्वं  
चिदानंदशुद्धपुरुषः दिव्योत्वम् ॥१॥

त्वं अधो त्वं उर्ध्वः पूर्वं पश्चिमौ च  
त्वं बामदक्षीणो त्वं च सर्वपार्श्वः  
त्वं अत्र त्वं तत्र सर्वत्र त्वमैव  
चिदानंदशुद्धपुरुषः दिव्योत्वम् ॥२॥

त्वं च पंचमात्रा पंचइन्द्रिय स्त्वं  
त्वं च पंचप्राणो त्वं च पंचकोषः  
त्रैशरीरो त्वं त्वं च देहस्य देही  
चिदानंदशुद्धपुरुषः दिव्योत्वम् ॥३॥

त्वमादि अंतस्त्वं अनादि अनंतम्  
त्वं च दिव्यस्थाणु अचलं च नित्यं  
शुक्ष्मातिशुक्ष्मस्त्वं गुरुर्गरीयान् च  
चिदानंदशुद्धपुरुषः दिव्योत्वम् ॥४॥

त्वं जले स्थले त्वं बनेगगने च  
अनले मरुते पर्वते पाषाणे  
तृणे च भूते च सर्वं दृश्यादृश्ये  
चिदानंदशुद्धपुरुषः दिव्योत्वम् ॥५॥

त्वं पाशे दूरे त्वं बाहिरन्तरे च  
मनो त्वं बुद्धि त्वं चित्ताहंकारस्य  
सर्वं पाणिपादाः बिद्याशक्ति त्वं च  
चिदानंदशुद्धपुरुषः दिव्योत्वम् ॥६॥

त्वं ज्ञानो ज्ञेय स्त्वं त्वं च ज्ञानगम्यः  
त्वं दानः दाता त्वं च भर्ताभोक्ता त्वम्  
त्वं जपो तपस्त्वं च यज्ञाधियज्ञः  
चिदानंदशुद्धपुरुषः दिव्योत्वम् ॥७॥

त्वं सत्त्वोरजस्तामसः गुणातीतः  
त्वं भूतो भविष्य स्त्वं च कालातीतः  
प्रभबो सर्वस्य बिनाशः पुनश्च  
चिदानंदशुद्धपुरुषः दिव्योत्वम् ॥८॥

त्वं मंत्रो त्वं तीर्थः त्वं च पुण्यो पापः  
त्वं धर्मः अर्थ स्त्वं मोक्ष्यमोक्ष्यदाता  
त्वं साकारो त्वं च निराकाररूपः  
चिदानंदशुद्धपुरुषः दिव्योत्वम् ॥९॥

त्वमेव वैशाखे समीरे त्वमैव  
प्रभाते प्रकाशे सदाचिदाकाशे  
त्वमेव त्वमेव त्वमेव केवलम्  
चिदानंदशुद्धपुरुषः दिव्योत्वम् ॥१०॥

त्वमेव केवलम् त्वमेव केवलम्  
त्वमेव त्वमेव त्वमेव केवलम्  
त्वमेव त्वमेव त्वमेव त्वमेव  
त्वमेव त्वमेव .....  
चिदानंदशुद्धपुरुषः दिव्योत्वम् ॥१०॥

॥ इति मोक्ष्य एकादशकम् संपूर्णम् ॥

## मार्गशीर्ष दिसंबर पौष

| सोम | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | रवि |
|-----|------|-----|------|-------|-----|-----|
|     |      |     | ०१   | ०२    | ०३  | ०४  |
| ०५  | ०६   | ०७  | ०८   | ०९    | १०  | ११  |
| १२  | १३   | १४  | १५   | १६    | १७  | १८  |
| १९  | २०   | २१  | २२   | २३    | २४  | २५  |
| २६  | २७   | २८  | २९   | ३०    | ३१  |     |

एकादशी पूर्णिमा अमावस्या

## त्यौहार

०३ शनि - गीता जयंती / मोक्षदा एकादशी

०७ बुध - दत्तात्रेय जयंती

०८ गुरु - मार्गशीर्ष पूर्णिमा

१६ शुक्र - धनु संक्रांति

१९ सोम - सफला एकादशी

